*वित्तीय क्षेत्र में उत्तरदायी नवीनतम परिवर्तन तथा विनियम**

दुव्वुरी सुब्बाराव

बैंकिंग में आइटी के लिए उत्कृष्ट वार्षिक पुरस्कार के लिए आइ डी आर बी टी में एक बार और उपस्थित होना मेरे लिए हर्ष एवं गौरव की बात है। हर बार मैं यहां आता हूं। बैंकिंग प्रौद्योगिकी में सुधार के अपने मिशन में जिस तरह से आइडीआरबीटी लगा हुआ है उसके उत्साह एवं ऊर्जा से मैं प्रभावित हूं। इसके निदेशक सांबमूर्ति के नेतृत्व में विगत पांच वर्षों से अधिक समय में इस संस्थान ने अनेक क्षेत्रों में प्रभावशाली प्रगति की है। निचले एवं मध्यम स्तर के अधिकारियों के प्रशिक्षण के अलावा, यह संस्थान आइटी रणनीति-संबंधी बैंकों के बोर्ड से संबंधित निदेशकों को भी आमंत्रित करता है ताकि प्रबंधन के एक हथियार के रूप में आइटी के लिए नेतृत्व-स्तर पर वह सहमत हो सके। इस प्रकार के संस्थान से ही आपको ऐसी उम्मीद हो सकती है। किंतु, आइडीआरबीटी का कार्यनिष्पादन अपेक्षा से अधिक ही होता है। प्रौद्योगिकी के अग्रणी पहलुओं के प्रचार-प्रसार के लिए यह संस्थान बैंकिंग प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण के अलावा भी कार्य करता है जिससे बैंकों को कार्यक्षमता का लाभ होगा और बैंक के ग्राहकों को सुरक्षा मिलेगी।

आइडीआरबीटी

2. आइडीआरबीटी की अनेक उपलब्धियों में से कुछ की मैं यहां पहचान करना चाहता हूं :

- बैंकिंग में आइटी के विभिन्न पहलुओं के लिए सामान्य मानक विकसित करने में आइडीआरबीटी अग्रणी रहा है - इसका अद्यतन नमूना स्मार्ट कार्ड तथा माइक्रो एटीएम के लिए मानक हैं जो वित्तीय समावेशन को बढ़ाने में दीर्घ काल तक बना रहेगा।
- आइडीआरबीटी ने एक अनोखा सीआइएसओ फोरम स्थापित किया है जिसे वह, अन्य बातों के अतिरिक्त, बैंकों में सामान्य सरोकार की बातों में सहभागिता के लिए एक प्लेटफार्म के रूप में विकसित कर रहा है।
- आइडीआरबीटी ने अपने शिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता के लिए अत्यंत प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है, जैसा कि इसके छात्रों के प्लेसमेंट रिकार्ड से पता चला है।

3. अनेक क्षेत्रों में इस प्रभावशाली कार्यनिष्पादन की स्वीकृति के फलस्वरूप, मैं आइडीआरबीटी की उपलब्धियों के लिए रिज़र्व बैंक की प्रशंसा और श्री सांबमूर्ति के गंभीर एवं प्रबुद्ध नेतृत्व को रिकार्ड करना चाहता हूं।

नवीनतम परिवर्तन एवं विनियम

4. आज आइडीआरबीटी में हम वित्तीय नवीनतम परिवर्तन को मान्यता देकर समारोह मना रहे हैं - ये वे नवीनतम परिवर्तन हैं जिनके बारे में हमारा विश्वास है कि इनसे वित्तीय क्षेत्र को और सक्षम एवं प्रयोग सौकर्य बनाने में योगदान मिलेगा और ऐसा करने से संपदा क्षेत्र के विकास एवं कल्याण कार्य में योगदान मिलेगा। वित्तीय नवीनतम परिवर्तन तथा वित्तीय विनियम संबंधी कतिपय संदर्भों के बारे में बात करने का इससे अच्छा अवसर मुझे नहीं मिल सकता।

5. आग की खोज से लेकर आइ-पैड के आविष्कार तक, नवीनतम परिवर्तन मानव प्रगति का अजस स्रोत रहा है। हम सभी नैसर्गिक रूप से इस बात को स्वीकार करते हैं कि हस्तक्षेप-रहित क्षेत्र में नवीनतम परिवर्तन सर्वोत्तम रूप में वहां फलता-फूलता है जहां नवीनतम परिवर्तनकर्ता अपने प्रयासों के लाभ के औचित्य की उम्मीद कर सकता है। इसी प्रकार, हम सभी नवीनतम परिवर्तन के विनिमय की आवश्यकता को भी स्वीकार करते हैं ताकि बाज़ार की विफलता को ठीक किया जा सके। इसके कई कारण हो सकते हैं - बाहरी कारण, सूचना संबंधी विषमताएं, नैतिक अड़चनें, गलत चयन आदि। उदाहरण के लिए, हम सभी समझते हैं कि बाज़ार में लाने से पहले नई दवाइयों का परीक्षण किया जाना चाहिए और वायुयान तथा मोटरवाहनों के नए माडल सुरक्षा मानकों के अनुरूप होने चाहिए। वित्तीय विनियम के लिए भी वही तर्क होना चाहिए, हालांकि उसे लोग ऐसा नहीं मानते।

6. यद्यपि विनियम के पक्ष में प्रस्तुत तर्क काफी लंबे-चौड़े हैं किंतु इसके विपरीत दिया जानेवाला तर्क प्रायः यह है कि अनुचित या अविवेकपूर्ण विनियम से नवीनतम परिवर्तन का दम घुट जाएगा। इसलिए विनियामकों के सामने चुनौती जनता के हितों की रक्षा करने की है। इसके साथ ही, उन्हें यह भी सुनिश्चित करना है कि नवीनतम परिवर्तन से कार्यक्षमता में वृद्धि का दम भी न घुटने पाए। इसे ही मैं उदरदायी विनियम कहूंगा। आज विश्व का दृष्टिकोण यह है कि नवीनतम परिवर्तन लागू न करने देने का कारण विनियामकों की विफलता है और

* 2 अगस्त 2013 को हैदराबाद में बैंकिंग प्रौद्योगिकी विकास और अनुसंधान संस्थान में बैंकिंग प्रौद्योगिकी उत्कृष्ट पुरस्कार समारोह में भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ. दुव्वुरी सुब्बाराव का मुख्य भाषण।

सामाजिक रूप से उन्हें उत्तरदायी ठहराया जाता है जिससे संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

7. इस प्रकार की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, आज के अपने भाषण में मैं निम्नलिखित बातों पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं जिनका संबंध वित्तीय क्षेत्र में नवीनतम परिवर्तन एवं विनियम से है :

i. अन्य बाजारों से वित्तीय बाजार किस प्रकार भिन्न हैं?

ii. वित्तीय क्षेत्र में उत्तरदायी नवीनतम परिवर्तन तथा विनियम के लिए इन भिन्नताओं का क्या निहितार्थ है?

iii. क्या वित्तीय नवीनतम परिवर्तन अच्छा या बुरा है?

iv. उत्तरदायी वित्तीय विनियम के प्रति रिज़र्व बैंक की क्या सोच है?

v. क्या ईक्विटी के संवर्धन में वित्तीय विनियम की कोई भूमिका है?

अन्य बाजारों से वित्तीय बाजार किस प्रकार भिन्न है ?

8. मेरा पहला प्रश्न : अन्य बाज़ारों से वित्तीय बाज़ार कैसे भिन्न हैं? मैं चार महत्त्पूर्ण तरीके उद्धृत करना चाहता हूं जिनमें वित्तीय बाज़ार अन्य बाजारों से भिन्न हैं।

9. पहला, वित्तीय बाज़ार भिन्न हैं क्योंकि उनमें स्वतः सुधार नहीं हो सकता। पूंजीवाद के मूलभूत पूर्वानुमानों, अदम स्मिथ से लेकर बौद्धिक उत्पत्ति की रूपरेखा तक, में से एक अनुमान यह है कि प्रतिस्पर्धी बाज़ार में कीमतें मांग के साथ आपूर्ति के अनुसार समायोजित होती हैं। यदि असंतुलन है भी तो वह शीघ्र ही अपने आप संतुलित हो जाता है। इस बात का तर्क दिया जाता है कि प्रतिस्पर्धी बाजार की यह उक्ति वित्तीय बाज़ारों पर लागू नहीं होती क्योंकि कीमत में सुधार आने से पहले ही खतरनाक स्तर तक वित्तीय गुबार तैयार हो सकते हैं। वास्तव में, निरंतर चल रहे वैश्विक वित्तीय संकट की सीखों में से एक यह है कि उम्मीद से ज्यादा लंबे समय तक वित्तीय प्रणाली दबाव झेल सकती है। अतः, अचानक उसमें विस्फोट होने की स्थिति में वह विनाशकारी तथा संहारक हो सकती है।

10. दूसरा, वित्तीय फर्मों के पास अनोखे प्रकार की अत्यंत उच्च किस्म की क्षमता एवं आंतरिक जुड़ाव होता है। यदि कोई गैर-वित्तीय फर्म फेल हो जाती है तो उसके शेयरधारक ही हानि उठाते हैं, बाहरी प्रभाव वहां सीमित होता है। इसके विपरीत, सभी वित्तीय फर्में आंतरिक रूप से जुड़ी होती हैं। एक संस्थान या एक बाज़ार में किसी प्रकार का दबाव आने की स्थिति में संपूर्ण वित्तीय क्षेत्र में यह बात तेजी से फैल जाती है और छूत की तरह इसका विस्तार हो जाता है। इसका सबसे स्पष्ट प्रदर्शन अमरीकी सब-प्राइम हाउसिंग मार्केट में उस विस्फोट में देखा गया जो हमारे समय का सबसे बड़ा वित्तीय संकट सिद्ध हुआ था।

11. तीसरा, वित्तीय बाज़ारों की एक परिभाषित विशेषता उनकी आवर्ती अनुकूलता है। सुधार या बढ़ोतरी होने की स्थिति में जोखिम के वैसे ही प्रकार के प्रति वित्तीय फर्में एक सुदृढ़ सामूहिक प्रवृत्ति का खूब प्रदर्शन करती हैं और गिरावट की स्थिति में खुले रूप में वे जोखिम के प्रति उदास हो जाती हैं। असल में, उनके संघटन की यह चिरपरिचित भ्रामकता है। किसी एक बैंक के लिए कोई खास कारबार मॉडल लाभदायक हो सकता है, लेकिन यदि सभी बैंक उसी कारबार मॉडल को अपनाने लगें तो आवर्ती अनुकूल जोखिम इस प्रकार के मॉडल को सामूहिक रूप से विनाशकारी बना सकता है। दूसरे शब्दों में, स्वस्थ वित्तीय संस्थानों के समूह के लिए जरूरी नहीं कि वह स्वस्थ वित्तीय प्रणाली का निर्माण करेगा।

12. अंत में, वित्तीय बाज़ार भिन्न हैं क्योंकि इस अर्थ में वे अंतर्मुखी हैं कि जो प्रायः घट सकता है उसके बारे में हमारा विश्वास उसे प्रभावित करता है, जैसा कि 'द इकॉनमिस्ट मैगजीन' ने कुछ समय पहले पूछा था कि क्या तूफान के आने की ज्यादा संभावना का कारण यह है कि ज्यादा तूफान-बीमा कराए गए हैं। सामान्य सोच तो इसे इनकार करती है, किंतु वित्तीय दुनिया में इस प्रकार की सामान्य सोच काम नहीं करती। वित्तीय बीमा जितना ही किया जाएगा उतनी अधिक संख्या में बीमाकृत घटनाएँ होंगी क्योंकि जिन लोगों का फायदा होगा वे चाहेंगे कि ऐसा हो।

13. मैंने विस्तार से इनके बारे में चर्चा की ताकि इस बात पर जोर पड़े कि कुछ मूलभूत बातों में दूसरे बाजारों की तुलना में वित्तीय बाज़ार भिन्न स्वरूप के हैं जिनके लिए नवीनतम परिवर्तन एवं विनियम के प्रति एक अलग किस्म की पहल जरूरी है।

वित्तीय क्षेत्र में उत्तरदायी नवीनतम परिवर्तन तथा विनियम के लिए इन भिन्नताओं का क्या निहितार्थ है ?

14. इसके लिए मैं अपने दूसरे प्रश्न पर आता हूं : ये भिन्नताएं क्या हैं जो उत्तरदायी नवीनतम परिवर्तन एवं विनियम के लिए वित्तीय क्षेत्र में अंतर करती हैं? मैं कोशिश करता हूं और उसके बारे में बताना चाहता हूं।

15. अर्थशास्त्र के मूलभूत पूर्वानुमानों में से एक यह है कि मनुष्य विवेकशील प्राणी है। 'विवेकशील प्राणी' की यह

अवधारण राजनीतिक अर्थशास्त्र के इच्छास्वातंत्र्यवादी दर्शन के लिए बौद्धिक आधार प्रदान करती है। इसका विश्वास है कि यह अनावश्यक है, यहां तक की अनुचित भी, कि लोगों को उनकी मर्जी के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान की जाए। विवेकशील व्यक्तियों को स्वतंत्र होना चाहिए और उनकी मर्जी के लिए उन्हें उत्तरदायी होना चाहिए। चुनाव करने के व्यक्तिगत अधिकार के साथ सरकार को तब तक दखल नहीं देना चाहिए जब तक कि उनकी इच्छाओं के कारण दूसरों पर असर पड़े और उनका नुकसान हो।

16. वास्तव में, इच्छा स्वातंत्र्यवादी राजनीतिक दर्शन अकादमिक एवं सरकारी नीति दोनों ही क्षेत्रों के लिए चुनौती रही है। इस चुनौती का सार यह है कि विवेकशील मनुष्य की अवधारण एक मिथ रही है। एक विवेकशील मनुष्य, पाठ्यपुस्तक की शब्दावली में 'ईकोन', वह है जो पाठ्पुस्तक में दी गई परिभाषा के अनुसार सोच-विचार करनेवाला, भावुक न हो, स्वार्थी तथा पूरी तरह से जानकार हो। दूसरी ओर, लोग 'मानवीय' हैं : उनके निर्णय एवं कार्य, भावनाओं, पूर्वग्रहों, निर्णयों से संचालित होते हैं और वे अपने निर्णयों को उपलब्ध सूचना प्राप्त होने पर भी, लागू करने में, पूरी सूचना एवं अयोग्यता या अनिच्छा दोनों के अभाव में पंगु हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में, सरकार को अधिकतम कल्याणकारी के रूप में, लोगों को आगे बढ़ाने का काम करना पड़ता है ताकि वे उत्तरदायी चुनाव कर सकें।

17. व्यावहारिक अर्थशास्त्र से ये ही पाठ ऐसे हैं जो वित्तीय विनियम के उद्देश्य के रूप में उपभोक्ता संरक्षण के लिए आधार प्रदान करते हैं। जैसाकि हमने पहले चर्चा की है, वित्तीय बाज़ार कई महत्त्वपूर्ण रूपों में भिन्न हैं। वित्तीय उत्पाद जटिल किस्म के हैं और वे प्रायः अपारदर्शी हैं। धन बचानेवाले तथा धन के निवेशकर्ता सूचना की विषमताओं के कारण पंगु हैं। उन्हें अपर्याप्त जानकारी के आधार पर चुनाव करना पड़ता है और वे अतर्कसंगत भावनाओं से प्रभावित हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, वित्तीय बाज़ारों में गुबार को तत्काल देख पाना कठिन है। जब ये गुबार फूटते हैं, तो धन संचयकर्ता तथा निवेशकर्ता न केवल अपनी बचत एवं निवेश राशि के डूब जाने के कारण बल्कि कर दाता के कारण भी उदास हो जाते हैं। उन्हें वित्तीय अस्थिरता की भारी रकम का बोझ उठाना पड़ता है।

18. दुनिया इस प्रकार की सीखों को बड़ी कठिनाई से याद करती है। वृद्धि के न होने तथा कल्याण के समाप्त होने से वैश्विक वित्तीय संकट से अत्यधिक हानि हुई है। इस प्रकार के संकटों के प्रति महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं में से कतिपय ने उपभोक्ता संरक्षण पर नए सिरे से प्रकाश डाला है जिन पर पुराने विनियमों तथा वित्तीय संस्थाओं के लिए अनिवार्य आचरण संहिता दोनों के अनुसार काम करना होगा। व्यापक अर्थ में, इससे उत्तरदायी वित्तीय नवीनतम परिवर्तन तथा विनियम के लिए नींव एवं ढांचा तैयार होना चाहिए।

क्या वित्तीय नवीनतम परिवर्तन अच्छा या बुरा है ?

19. अब मैं तीसरे प्रश्न पर आता हूं : क्या वित्तीय नवीनतम परिवर्तन अच्छा या बुरा है ?

20. निश्चित रूप से यह एक घिसापिटा प्रश्न है और इसका रटारटाया उत्तर है : सभी नवीनतम परिवर्तन अच्छा होता है। यह अपने आप में तो नवीनतम परिवर्तन नहीं है, किंतु इस नवीनतम परिवर्तन को काम में कैसे लाया जाता है, यही बात उसे अच्छा या बुरा बनाती है। यह बात सभी जगह सच है, वित्तीय क्षेत्र भी इसमें शामिल है। नवीनतम परिवर्तनों का गलत उपयोग किया जा सकता है अथवा अनेक कारणों से उनका अत्यधिक उपयोग किया जा सकता है, जैसे - लालच, गलत विश्वास या परिणामों का अनुमान लगाने में नितांत अयोग्यता।

21. वित्तीय क्षेत्र से एक उदाहरण देकर मैं अपनी बात स्पष्ट करता हूं। वित्त के क्षेत्र में परिमाणात्मक तकनीक का प्रयोग अत्यधिक नवीनतम परिवर्तन वाला रहा है। वित्तीय क्षेत्र की वृद्धि में इसका योगदान काफी बड़ा है। उदाहरण के लिए, द ब्लैक शोल्ज विकल्प मूल्यन नीति मॉडल के अनोखे गणित के एक अंश से कुछ ज्यादा था; यह रूपांतरणीय था। अमरीकी वित्त के बुद्धिवाद के यह विपरीत था। इसने बताया कि सट्टे के लिए और बेहतर वैज्ञानिक दृष्टिकोण संभव है और वित्तीय बाजारों को इसने तेजड़िए रिंग से परिमाणात्मक शक्ति घरानों में बदल दिया।

22. किंतु परिमाणात्मक तकनीक की प्रायोगिकता की स्पष्ट रूप से अपनी सीमाएं थीं। वे सभी असली दुनिया के कुछ सरलीकरण में उलझे थे और वे सभी कतिपय पूर्वानुमानों पर आधारित थे। जब इस माडल का सूक्ष्मीकरण असली दुनिया के अनिवार्य पहलुओं को आत्मसात नहीं करता है या जब पूर्वानुमान काम में नहीं आता तो परिमाणात्मक मॉडल फेल हो जाता है। परिमाणात्मक तकनीकों के प्रयोग की बड़ी विफलता इतनी ज्यादा नहीं थी कि तकनीकें अपने आप में बुरी नवीनतम परिवर्तन वाली थीं, किंतु यह कि हमने उनका दुरुपयोग किया और यह पूछना भूल गए कि : क्या मेरा मॉडल असली दुनिया का प्रतिनिधि है? क्या मॉडल में अंतर्निहित पूर्वानुमान अभी भी ठीक हैं?

23. अतः, 'क्या वित्तीय नवीनतम परिवर्तन अच्छा या बुरा है?' इस प्रश्न का मेरा साधारण-सा उत्तर यह है कि यह उस हद तक तो ठीक है जहां तक यह आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण में योगदान करता है।

उत्तरदायी वित्तीय विनियम के प्रति रिज़र्व बैंक की क्या सोच है?

24. रिज़र्व बैंक बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियों तथा वित्तीय बाजारों के एक बड़े हिस्से के लिए विनियामक है। विनियम के प्रति हमारी सोच वित्तीय स्थिरता तथा उपभोक्त संरक्षण को बनाए रखने की रही है।

25. इन उद्देश्यों में संतुलन बनाए रखने की अनिवार्यता ने ही रिज़र्व बैंक को यह दायित्व सौंपा है कि वह वित्तीय नवीनतम परिवर्तन एक नपातुला किंतु सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाए। उदाहरण के लिए, विनियम को इतना कठोर बनाना संभव है ताकि वित्तीय स्थिरता एवं ग्राहक संरक्षण भलीभांति सुरक्षित रहें, लेकिन विकास के रूप में इसकी लागत चुकानी पड़ेगी। इससे उस नवीनतम परिवर्तन का दम भी घुटेगा जो आर्थिक गतिविधि को आगे बढ़ा सकता है। दूसरे अंतिम छोर पर, चिंता-रहित होने और नवीनतम परिवर्तन के प्रति पूरी तरह से स्वच्छंद दृष्टिकोण अपनाने की भी संभावना है। इससे उल्लंघन, क्रमबद्ध दबाव बढ़ेंगे तथा अंत में वित्तीय ढांचे में विस्फोट होगा। मेरे विचार से, ऐसी स्थिति में उत्तरदायी विनियम के लिए यह अनिवार्य है कि वह गतिशील आधार पर इन उद्देश्यों के बीच उचित संतुलन बनाए रखे और बिना किसी सैद्धांतिक मत के खुले दिमाग से ऐसा करे।

26. अब मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि रिज़र्व बैंक ने कई क्षेत्रों में, व्यवहार में, किस प्रकार से उत्तरदायी विनियम के प्रति इस सोच को लागू किया है।

भारतीय रिज़र्व बैंक का उत्तरदायी विनियम - अतिसक्रिय समष्टि विवेकसम्मत नीति

27. जैसा कि अब हम भलीभांति जानते हैं, उपर्युक्त संकट के प्रमुख कारणों में से एक कारण अमरीकी सब-प्राइम आवास बाजार में अतिरेक का होना था। यदि इस अतिरेक का प्रचलित चित्रण मुझे करना होता तो मैं बताता कि आवास के लिए अनुत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से बैंकों ने उन उधारकर्ताओं को उधार दिया जिनकी चुकौती क्षमता आवास के मूल्य पर पूरी तरह निर्भर थी और जो निरंतर आधार पर बढ़ रहा था। ऐसी स्थिति में, यह अनिवार्य था कि एक गुबार उस समय फूटा जब आवास की कीमतें क्लासिक मिस्की के क्षणिक सुखबोध की तरह रहा जिससे तहलका मच गया और वह धराशायी हो गया।

28. रिज़र्व बैंक में, मेरे पूर्ववर्ती डॉ. वाई.वी. रेड्डी के नेतृत्व में, रिज़र्व बैंक ने इस घटना के प्रति उत्तरदायी भूमिका निभाई। भारतीय स्थावर संपदा तथा आवास क्षत्रों में इस प्रकार के अतिरेकों को रोकने के लिए रिज़र्व बैंक ने उपाय किए। स्थावर संपदा क्षेत्र को उधार देनेवाले बैंक के लिए रिज़र्व बैंक ने जोखिम-भार और प्रावधान के मानकों में बढ़ोतरी कर दी।

भारतीय रिज़र्व बैंक उत्तरदायी विनियम - बासेल III

29. बासेल III के कार्यान्वयन में रिज़र्व बैंक ने उत्तरदायी दृष्टिकोण अपनाया है। बासेल III के भारत में अपनाए जाने के बारे में दो मुद्दों के संबंध में लोगों ने प्रश्न उठाए हैं। पहला, बासेल III केवल उन्नत अर्थव्यवस्थावाले बैंकों के लिए जरूरी है जिन्होंने अतिरेक किए हैं, न कि भारतीय बैंकों के लिए जो विवेकसम्मत सीमाओं के भीतर रहे हैं। उनका दूसरा प्रश्न यह है कि बासेल III के मानदंड से ऐसे समय में भारत में ऋण की लागत बढ़ेगी जब हमारी आर्थिक वृद्धि की ऋण मात्रा में बढ़ोतरी होनेवाली है।

30. इन तर्कों के उत्तर में मैं यह बताना चाहता हूं कि बासेल III को कार्यान्वित न करने के लिए रिज़र्व बैंक को अनुत्तरदायी माना जाएगा। विश्व के साथ तीव्र गति से एकीकृत होनेवाले देश के रूप में हम वह विनियामक शासन-व्यवस्था नहीं रख सकते जो वैश्विक मॉडल से अलग-अलग हो। आखिरकार, आगे बढ़ने से भारतीय बैंक अपने विदेशी लेन-देनों को बढ़ाएंगे और विदेशी बैंक भारत में आकर अपना कार्य करेंगे। इस प्रकार का एकीकरण भारत के दीर्घकालीन आर्थिक हित में होगा। यदि वैश्विक मानदंडों के अनुरूप हमारी विनियामक शासन व्यवस्था नहीं काम करेगी तो इस हित को नुकसान होगा। इस तर्क के लिए कि बासेल III के कार्यान्वयन से वृद्धि को नुकसान होगा, मेरा उत्तर केवल यह होगा कि अंतर्राष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआइएस) के अर्थशास्त्रियों द्वारा किया गया रिसर्च देख लिया जाए जिससे यह प्रकट होता है कि अल्पावधि में भले ही बासेल III में कुछ लागत बढ़ेगी, किंतु मध्यावधि में वृद्धि की हमारी संभावनाएं इससे पक्की रहेंगी।

भारतीय रिज़र्व बैंक का उत्तरदायी विनियम - नए बैंक लाइसेंस

31. उत्तरदायी विनियम की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है - हठधर्मी न होकर व्यावहारिक होना। बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल खुले दिमाग तथा विनियमों में परिवर्तन करने का

इच्छुक होना है बशर्ते कि ज्यादा संख्या में लोग इस प्रकार की मांग करनेवाले हों। मैं इसे स्पष्ट करना चाहूंगा।

32. कुछ महीने पहले, निजी क्षेत्र में नए बैंकों के लाइसेंस के संबंध में रिज़र्व बैंक ने दिशा निर्देश जारी किए थे। बैंक लाइसेंस के पहले के दौर के विपरीत, हमने यह तय किया है कि बैंक लाइसेंस के लिए कार्पोरेट जगत को पात्र समझा जाए। विस्तृत वाद-विवाद, परामर्श एवं विचार-विमर्श के बाद हमने ऐसा किया।

33. बैंकिंग में कार्पोरेट जगत के लोगों को शामिल किए जाने के विपरीत निम्नलिखित मुख्य तर्क दिए गए। पहला, बैंकों के यहां जनता की बहुत बड़ी राशि जमा है, कार्पोरेट जगत इस बड़ी एवं सस्ती जमा राशि का दुरुपयोग अपनी स्वयं की यूनिटों, या ग्राहकों तथा आपूर्तिकर्ताओं को उधार देने में करेंगे। दूसरा, बड़े कार्पोरेट घरानों के स्वामित्व का ढाँचा विनियामक अंतरपणन के लिए अवसरों का द्वार खोल देगा बशर्ते कि सर्वोच्च स्तर पर बैंक का प्रवर्तक कोई अविनियमित कंपनी हो। इससे जोखिम आकलन में अंतराल की संभावना हो सकती है और कार्पोरेट से बैंक को संक्रमण का जोखिम बढ़ सकता है तथा वहां से यह व्यापक होकर वित्तीय प्रणाली को अपने चपेट में ले सकता है। तीसरा, कार्पोरेट जगत के विरुद्ध तर्क यह दिया गया है कि उनके हाथ में बैंकिंग आ जाने से आर्थिक शक्ति उनके हाथ में केंद्रित हो जाएगी और इसका राजनीतिक प्रभाव पड़ेगा। चौथा, लोग पूछते हैं कि कार्पोरेट जगत के लिए बैंकिंग का द्वारा खोलने से हमें अनावश्यक जोखिम को आमंत्रण देने की क्या जरूरत है जबकि कार्पोरेट क्षेत्र से बाहर के लोग काफी संख्या में सक्षम-मजबूत आवेदक हैं।

34. वास्तव में, मैंने जो बताया है उसकी तुलना में आलोचना कई प्रकार की एवं बारीक किस्म की हुई है। मेरी सोच केवल एक मोटी रूपरेखा प्रस्तुत करने की थी। विगत तीन वर्षों में कई स्तरों पर हमने इस आलोचना का उत्तर दिया है। मैं उन्हें संक्षेप में आपके सामने रखना चाहता हूं।

35. कार्पोरेट जगत को अनुमति देने का मुख्य कारण उनकी प्रामाणिक उद्यमशील निपुणता तथा प्रबंधकीय विशेषज्ञता के बारे में प्रभाव-क्षमता है। भारतीय कार्पोरेट के लोग मुख्य शहर से दूरदराज के क्षेत्र में उद्योग स्थापित करने का साहस करते रहे हैं और आशा है कि वित्तीय क्षेत्र के लिए नए कारबार माडलों की स्थापना में वे उद्यम की उसी भावना का परिचय देंगे। बड़े उद्योग घराने काफी बड़ी मात्रा में पूंजी भी अपने साथ लाएंगे जिससे वित्तीय मध्यस्थता को मजबूती मिलेगी तथा हमारा बैंकिंग क्षेत्र और ज्यादा प्रतिस्पर्धी होगा। इसके अलावा, कार्पोरेट जगत अन्य विनियमित क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, जैसे - टेलीकाम, एअरपोर्ट, विद्युत आदि। विनियमित वित्तीय गतिविधियों के अन्य क्षेत्रों में भी उन्हें अनुमति दी गई है, जैसे - म्युचुअल फंड, परिसंपत्ति प्रबंधन, बीमा आदि।

36. संक्षेप में, बैंकिंग क्षेत्र में कार्पोरेट जगत के पक्ष एवं विपक्ष के तर्क में इस बीच बदलाव आया है। इसी परिवर्तन की स्थिति के फलस्वरूप रिज़र्व बैंक ने व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया और तय किया कि बैंकिंग क्षेत्र में कार्पोरेट जगत को अनुमति दिए जाने से नितांत सकारात्मक असर पड़ेगा।

37. मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि आलोचकों के तर्क हल्के-फुल्के नहीं थे और हम उनके प्रति संवेदनशील हैं। इसीलिए कार्पोरेट ढांचे के लिए फिट तथा उचित मानदंड, कार्पोरेट गवर्नेन्स मानक ऋण देने के मानदंड आदि के लिए अपेक्षित मानदंड निर्धारित करके लाइसेंस क्षेत्र में हमने कई सुरक्षा के उपाय किए हैं। विगत कुछ समय से प्रवर्तक समूह के शेयरहोल्डिंग को कम करने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त, अंतर्निहित सुरक्षा भी है क्योंकि कार्पोरेट जगत के बड़े कारबार हितों को खतरा भी है और शायद इसीलिए कारबार के बैंकिंग क्षेत्र को ठीक से न संभालने के बारे में वे अपने कारबार की प्रतिष्ठा के साथ समझौता करने के लिए अनिच्छुक होंगे। अंत में, बैंकिंग विनियामक अधिनियम को अब संशोधित करके रिज़र्व बैंक को ऐसी शक्तियां प्रदान की गई हैं जिससे यदि रिज़र्व बैंक निश्चय कर ले तो वह बैंक प्रबंधन के विरुद्ध कार्रवाई कर सकता है बशर्ते कि बैंक का मैनेजमेंट सार्वजनिक हित के या जमाकर्ताओं के हित के विरुद्ध काम कर रहा हो।

38. पुनः, उत्तरदायी विनियम के प्रति रिज़र्व बैंक के दृष्टिकोण को समझाने के लिए नए बैंक लाइसेंस के इस मुद्दे पर मैंने विस्तार से विचार किया है।

भारतीय रिज़र्व बैंक का उत्तरदायी विनियम - वित्तीय बाज़ार

39. वित्तीय बाज़ारों के विनियम के प्रति रिज़र्व बैंक का दृष्टिकोण उत्तदायित्व के उसी भाव से व्यक्त किया गया है। वित्तीय बाज़ारों के विनियमन में, हमने तीन मोटे सिद्धांतों का अनुसरण किया है। पहला, पैदा हो रहे जोखिम को रोकने के लिए उपलब्ध वित्तीय उत्पादों के मेन्यू (तालिका) का आकार बढ़ाया जाना चाहिए। दूसरा, नए उत्पादों का परिचय बाजार के सहभागियों द्वारा उत्पाद की स्वीकृति से आदेशित क्रमिक प्रक्रिया से होना चाहिए। अंत में, व्यापार, निपटान तथा वर्तमान एवं नए वित्तीय उत्पादों की रिपोर्टिंग के लिए बाजार ढांचे की विशालता में सुधार किया जाना चाहिए।

40. इसे मैं करेंसी बाजार के विनियम के प्रति रिज़र्व बैंक के दृष्टिकोण से स्पष्ट करता हूं। सबसे पहले हमने ओटीसी डेरिवेटिव्स (करेंसी वायदा) शुरू किया था ताकि संपदा क्षेत्र खतरे से बचाव की जरूरतों को हम पूरा कर सकें। ऐसा करने से सहभागियों को अंतर्निहित निवेश का अवसर मिलेगा। इसी के साथ, अतिरिक्त जोखिम उठाने को रोकने के लिए हमने उन पर ऋण देने की मात्रा की सीमा तय कर दी है।

41. करेंसी वायदा बाजार के स्थिर होने के बाद, हमने करेंसी फ्यूचर्स बाजार के विकास पर ध्यान दिया ताकि यह बाज़ार गंभीर हो सके। चूंकि इसमें विदेशी मुद्राओं का लेनदेन किया जाता है, इसलिए फ्यूचर्स बाजार कीमत का पता लगाने की अपनी सक्षमता को बढ़ाने के लिए ही है और यह भी कि फुटकर ग्राहक उस तक पहुंच सकें। हमने यूएसडी-आइएनआर फ्यूचर्स के साथ शुरुआत की है और धीरे-धीरे द रूपी-द यूरो, पौंड तथा येन के साथ अन्य करेंसी जोड़ों तक इसका विस्तार करेंगे।

42. हाल के सप्ताहों में, भारिबैंक तथा सेबी दोनों ने मिलकर मार्जिन की राशि बढ़ाकर तथा निवेश की राशि सीमित करके फ्यूचर्स बाजार पर कुछ प्रतिबंध लगा दिए हैं। इसका लाभ बाजार के सहभागी ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त, बैंकों द्वारा स्वामित्व क्रय-विक्रय की मनाही कर दी गई। संबंधित परिपत्र में, जैसाकि हमने बताया है, ये उपाय अनुचित सट्टा को रोकने के लिए किए गए हैं क्योंकि इससे विदेशी मुद्रा विनिमय दर में उतार-चढ़ाव हो रहा था। इस सप्ताह के शुरू में, जैसा कि हमने तिमाही नीति की समीक्षा में बताया है, विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में स्थिरता आने पर, सुनिश्चित करने के बाद, इन उपायों को हम वापस ले लेंगे। रिज़र्व बैंक की समीक्षा में, यह बताया गया है कि विकास एवं स्थिरता के लिए विदेशी मुद्रा विनिमय दर में अनुचित उतार-चढ़ाव हानिकारक है और इस पर अंकुश लगाया जाना चाहिए।

भारतीय रिज़र्व बैंक का उत्तरदायी विनियम - बेंचमार्क दर

43. मैं एक और उदाहरण देना चाहता हूं कि कैसे हम उत्तरदायी वित्तीय विनियम का कार्यान्वयन करते हैं। लिबोर दर-निर्धारण कांड से हम सभी परिचित हैं जो विगत वर्ष की घटना है। लंदन के कुछ बैंकों के विरुद्ध पिछले वर्ष आरोप लगा था कि उन्होंने मुद्रा बाजार ब्याज दर के संबंध में गलत आकड़ों की रिपोर्टिंग की थी ताकि वे अपनी कमजोरी और गिर रही ऋण-पात्रता को छिपा सकें तथा अपने तुलनपत्र का बचाव कर सकें। इस कांड के फलस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जोरदार बहस शुरू हो गई कि क्या गलती हुई, कैसे इसे तय किया जाए और केंद्रीय बैंकों तथा विनियामक बैंकों की भूमिका यह सुनिश्चित करने में क्या होगी कि बैंकों द्वारा रिपोर्ट किए गए आंकड़े सही हैं और यह कि बेंचमार्क दर के आकलन की प्रक्रिया बहुत कठोर है।

44. हमारी प्रणाली में विदेशी मुद्रा विनिमय संदर्भ-दर इस तरह की है जिसे रिज़र्व बैंक प्रतिदिन निकालता है। क्या भारत में लिबोर की तरह की समस्या उत्पन्न हो सकती है? भारत में लिबोर का प्रतिरूप मिबोर है जो प्रयोग में कम ही आता है जिसे फिमडा-एनएसई ने सेट किया है। हालांकि यह दर पोलिंग के माध्यम से सेट की जाती है, जो एक महत्वपूर्ण पूर्वोपाय के रूप में इलेक्ट्रानिक आर्डर मैचिंग पद्धति के माध्यम से व्यापार के 90 प्रतिशत से ज्यादा का कार्य संपादन एवं प्रसार की पारदर्शी पद्धति का काम करता है।

45. रिज़र्व बैंक अपनी ओर से एक मजबूत सांख्यिकीय पद्धति अपनाते हुए प्रतिदिन संदर्भ विदेशी मुद्रा विनिमय दरें संग्रह करके उन्हें प्रकाशित करता है। पहले हम प्रत्येक कार्य दिवस को 12 बजे कुछ चुनिंदा बैंकों से पोल करके (सर्वेक्षण) बोली/प्रस्ताव-दर के जरिए औसत निकाल कर दर सेट किया करते थे। कुछ माह पहले हमने इस पद्धति को बदल दिया है। अब हमने दिन के 11.45 से दोपहर 12.15 के बीच स्वैच्छिक आधार पर पांच माइन्यूट बिंडो के चयन के आधार एक विस्तारित सूची से कतिपय बैंकों का सर्वेक्षण करके संदर्भ-दर तैयार कर लेते हैं। आवधिक रूप से हम बैंकों के चयन के लिए इस कार्यविधि का और सर्वेक्षण की कार्य-पद्धति की समीक्षा करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि संदर्भ दर बाज़ार की गतिविधि की सही स्थिति को दर्शानेवाली संदर्भ-दर बनी रहे।

46. हाल ही में, बैंक ने एक कार्यपालक विजय भास्कर की अध्यक्षता में एक समिति गठित की है ताकि भारत में प्रमुख वित्तीय बेंचमार्क की गणना तथा उसके प्रसार की प्रक्रिया का यह समिति व्यापक अध्ययन करे जिससे यह पता चल सके कि बेंचमार्क के लिए प्रक्रिया की सत्यता के मूल्यांकन तथा संस्था के दायित्व में नियंत्रण के मानक क्या हैं। इस समिति की रिपोर्ट आने के बाद, यथा आवश्यक, आगे की कार्रवाई हम करेंगे।

क्या ईक्विटी प्रवर्तन में वित्तीय विनियम की कोई भूमिका है?

47. उत्तरदायी विनियम के प्रति रिज़र्व बैंक के दृष्टिकोण को समझाने के बाद, अब मैं अपनी सूची के अंतिम प्रश्न पर आता हूं : ईक्विटी प्रर्वतन में क्या विनियम की कोई भूमिका है?

48. वृद्धि एवं ईक्विटी के बीच विभाजन विकास अर्थशास्त्र की मानक वस्तु है। बहुत समय से, यही मान्यता है कि हम वृद्धि की चिंता करते हैं तो ईक्विटी अपने आप ही उसका पीछा करती है, जैसे कि ज्वार सभी प्रकार की नावों को ऊंचा उठा देता है। अनुभव ने हमें सिखाया है कि असलियत ज्यादा जटिल होती है। आज का प्राप्त ज्ञान यह है कि वृद्धि, यद्यपि वही पर्याप्त नहीं है, ईक्विटी के लिए एक आवश्यक शर्त है। ईक्विटी पाने के लिए, हमें वृद्धि चाहिए जो गरीबी के प्रति संवेदनशील है - वह वृद्धि जिसके लिए गरीब योगदान करता है और वह वृद्धि जिससे गरीब लाभान्वित होता है।

49. इस प्रकार का मानक प्रश्न वित्तीय क्षेत्र विनियम के संदर्भ में कैसे खरा उतरता है? एक विनियामक के रूप में, इसी प्रश्न से हम जूझते हैं। क्या स्थिरता एवं उपभोक्ता संरक्षण हमारे विनियम के एकमात्र उद्देश्य हैं, अन्य प्रकार के लिखत ईक्विटी पाने के लिए नियोजित किए जाते हैं? अथवा ईक्विटी को विनियम के वास्तविक कार्य में एक परिवर्ती का काम करना चाहिए?

50. उत्तर पाने के लिए, उपर्युक्त प्रश्नों के विभिन्न रूप हमें अवश्य पूछने चाहिए। क्या वित्तीय क्षेत्र परंपरागत रूप से ईक्विटी प्रवर्तन है या कम-से-कम ईक्विटी से तटस्थ? हमारा अनुभव स्वतः इसके विपरीत है। वित्तीय क्षेत्र ईक्विटी समर्थन का पक्षधर नहीं है। वास्तव में, यह तर्क करने की संभावना भी है कि वित्तीय क्षेत्र के लिए यह जरूरी नहीं कि वह पिरामिड के निचले स्तर तक पहुंचे ही।

51. इस पक्षधरता को निष्प्रभावी करने के लिए हमारी प्रतिक्रिया यह रही है कि वित्तीय संस्थाओं द्वारा सामाजिक तौर पर अधिकतम कारबार-व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए विनियम का प्रयोग करना चाहिए। मुझे रिज़र्व बैंक के सकारात्मक कार्रवाई-विनियमों के कुछ नाम गिनाने की अनुमति दीजिए। हमारे पास एक निदेशित ऋण स्कीम, प्राथमिकता क्षेत्र उधारी है जिसमें सभी बैंकों को यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि उनके ऋण का कम-से-कम 40 प्रतिशत पहचान किए गए प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्रों को दिया जाता है। इनके नाम है - कृषि और सम्बद्ध गतिविधियां, अति लघु, छोटे एवं मझोले उद्योग, कम लागतवाले आवास एवं शिक्षा। हमारे यहां एक 'लीड बैंक' स्कीम है जिसके अंतर्गत देश में 600 से ज्यादा जिलों में प्रत्येक के लिए नामित वाणिज्य बैंक की पहचान की गई है ताकि वह जिला ऋण योजना का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होगा। इससे यह पता चलता है कि अर्थव्यवस्था के किन क्षेत्रों को ऋण दिए जाने का लक्ष्य है जिन्हें बैंक अनदेखी कर सकते हैं। हमने बैंक शाखाओं के लाइसेंस को ज्यादातर अविनियमित कर दिया है; अब बैंक 1,00,000 से कम की जनसंख्या वाले केंद्रों में अपनी शाखाएं खोलने के लिए स्वतंत्र हैं। इसमें दो शर्तें हैं : पहली यह कि 10,000 तक की अधिकतम जनसंख्यावाले बिना बैंक के गांवों में उनकी शाखाओं की कम-से-कम एक चौथाई शाखाएं खोली जानी चाहिए और दूसरा यह कि मेट्रो तथा बड़े शहरी केंद्रों में बैंक शाखा लाइसेंस के लिए वित्तीय क्षेत्र में उनका कार्यनिष्पादन एक मानदंड रहेगा।

52. हाल के वर्षों में, रिज़र्व बैंक का अब तक का उच्च स्तर का विकास अभियान हमारे वित्तीय समावेशन के आक्रामक प्रयास के फलस्वरूप रहा है। वित्तीय समावेशन क्यों महत्त्वपूर्ण है? यह महत्वपूर्ण इसलिए है कि समान वृद्धि को बनाए रखने के लिए यह एक आवश्यक शर्त है। बिना विस्तृत आधार वाले वित्तीय समावेशन के किसी कृषि संबंधी प्रणाली से औद्योगिक के बाद वाली एक आधुनिक सोसायटी में किसी अर्थव्यवस्था के प्रवेश करने के उदाहरण कुछ ही हैं। चूंकि लोग वित्तीय सेवाओं तक आसानी से पहुंच सकते हैं, इसलिए हम सभी अपने निजी अनुभव से यह जानते हैं कि आर्थिक अवसर वित्तीय पहुंच के साथ मजबूती से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार की पहुंच गरीब के लिए खासकर शक्तिशाली है क्योंकि इससे उन्हें बचत करने, निवेश करने तथा ऋण प्राप्त करने का अवसर मिलता है। महत्त्वपूर्ण रूप से, वित्तीय सेवाओं तक पहुंच के कारण गरीब व्यक्ति बीमारी, परिवार में किसी की मृत्यु या बेरोजगार हो जाने-जैसी स्थिति में आय के आघातों के विरुद्ध तथा संकट की स्थिति का मुकाबला करने में अपने को तैयार पाता है। यह कहने की जरूरत नहीं कि वित्तीय समावेशन से सूदखोर ऋणदाताओं के चंगुल से गरीब व्यक्ति की रक्षा होती है।

53. इस वित्तीय बहिष्कार का विस्तार अलग-अलग है। भारत में 6,00,000 लाख निवासियों में से 1,00,000 लाख से कम ही वाणिज्य बैंक शाखा का लाभ उठा पाते हैं। लगभग पूरे देश की 40 प्रतिशत जनसंख्या के पास ही बैंक खाता है और देश के उत्तर-पूर्व भाग में यह अनुपात और कम है।

54. ये आंकड़े दुःखद हैं। इनसे वित्तीय बहिष्कार की सही स्थिति का पता नहीं चलता। यहां तक कि जहाँ बैंक खाते खोलने के दावे किए जाते हैं वहां भी सत्यापन से प्रायः यह पता चला है कि ऐसे खाते निष्क्रिय हैं। उनमें से कुछ में ही कोई बैंकिंग लेन-देन होता है और बहुत ही कम खातों में कोई राशि जमा होती है। इससे पूरे देश में लाखों परिवार अपनी कमाई तथा उद्यमशील ज्ञान के अवसर से वंचित हैं और वे हाशिए पर तथा गरीबी का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

55. विगत कुछ वर्षों में, रिज़र्व बैंक ने वित्तीय समावेशन को दूर-दराज के इलाकों में पहुंचाने के कई प्रयास किए हैं। हमारा लक्ष्य केवल यह नहीं है कि गरीब परिवारों के पास एक बैंक खाता अवश्य हो, अपितु हम यह चाहते हैं कि वे उन खातों का प्रभावशाली तरीके से उपयोग बचत के लिए, धन भेजने के लिए तथा धन जमा करने के लिए करें।

56. रिज़र्व बैंक के विकास-जनादेश का अधिकांश नैतिक विश्वास पर टिका हुआ है। जहां कहीं भी जरूरी होता है, हम विकास के उद्देश्य को बढ़ाने में अपने विनियामक प्राधिकार का प्रयोग करने में पीछे नहीं रहे हैं। हालांकि विशुद्धतावादी इस पर प्रश्न कर सकते हैं, किंतु, रिज़र्व बैंक में, हमारा विश्वास 'उत्तरदायी वित्तीय विनियम' में है।

निष्कर्ष

57. अब तक मैंने जो कुछ कहा है उसका सार-संक्षेप देना चाहता हूं। मैंने सामान्य तौर पर विनियम के बारे में तार्किक स्पष्टीकरण से अपनी बात शुरू की थी और उसके बाद इस बात को स्पष्ट किया कि वित्तीय क्षेत्र किस प्रकार से अनोखा क्षेत्र है जिसके लिए स्थिरता एवं सुरक्षा तथा प्रोत्साहनपरक नवीनतम परिवर्तन के बीच विनियमन तथा एक भिन्न एवं ज्यादा सावधान संतुलन की अपेक्षा है। इसके बाद, मैंने अच्छे एवं बुरे वित्तीय नवीनतम परिवर्तन के बारे में बताया और यह भी कि किस प्रकार अच्छे नवीनतम परिवर्तन वे हैं जो अर्थव्यवस्था के वास्तविक क्षेत्रों के मूल्य में बढ़ोतरी करते हैं। इसके बाद, मैंने उत्तरदायी विनियम के प्रति रिज़र्व बैंक के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया और रिज़र्व बैंक की अनेक गतिविधियों से उदाहरण देकर इसे समझाया। अंत में, मैंने एक प्रश्न किया - ''क्या ईक्विटी प्राप्त करने के लिए विनियम की कोई भूमिका है?'' इस प्रश्न के बारे में रिज़र्व बैंक के दृष्टिकोण को मैंने स्पष्ट किया। यद्यपि में इस प्रकिया मं कुछ नए प्रश्न उठा सकता था।

58. पिछले वर्ष, पेरिस में उत्तरदायी नवीनतम परिवर्तन प्रेक्षणशाला ने उत्तरदायी नवीनतम परिवर्तन के लिए रिज़र्व बैंक को दुफ्रेनॉय पुरस्कार प्रदान किया था। दुफ्रेनॉय पुरस्कार की स्थापना उत्तरदायी वित्तीय नवीनतम परिवर्तन प्रेक्षणशाला तथा खदान पेरिस नकनीक ने संयुक्त रूप से किया था। वित्त में उत्तरदायी नवीनतम परिवर्तन-क्षेत्र में उल्लेखनीय और उत्कृष्ट पहल करने के सम्मान हेतु 1783 में पेरिस में स्थापित यह एक जानीमानी शिक्षा एवं अनुसंधान संस्था है।

59. दुफ्रेनॉय पुरस्कार रिज़र्व बैंक को वित्तीय उत्पादों की शुरुआत तथा विनियम के प्रति उसे क्रमिक दृष्टिकोण के लिए दिया गया था। उसकी प्रशस्ति का मैं यहां पर उल्लेख करना चाहता हूं :

''वित्तीय सेवा उद्योग में भारतीय रिज़र्व बैंक की प्रतिबद्धता का उत्तरदायी आचरण वित्तीय उत्पादों के मौलिक एवं नवीनतम परिवर्तनकारी दृष्टिकोण में निहित है। विशिष्ट वित्तीय नवीनतम परिवर्तनों की क्रमशः शुरुआत करना बैंक की प्राथमिकताओं में से एक प्राथमिकता रही है ताकि बड़े स्तर पर उनका प्रसार करने से पहले उनके व्यवहार का मूल्यांकन किया जा सके। बैंक की ऐसी अग्रणी सोच उस समय करना जबकि विशिष्ट नियमों के आवश्यक कार्यान्वयन के साथ वित्तीय नवीनतम परिवर्तन के लिए बाजारों को असली मानक परीक्षण स्थल मानने का विचार वित्तीय क्षेत्र में अभी भी मौजूद नहीं है। भारतीय रिज़र्व बैंक की क्रमिक सोच ने उन तत्वों, पूर्वोपायों की शृंखला तथा विपणन-पूर्व एवं विपणन-पश्चात की शुरुआत की है जो दूसरे देशों के लिए अपवादात्मक बेंचमार्क के रूप में हो सकते हैं।''

60. दुफ्रेनॉय पुरस्कार के अवार्ड से हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई। किंतु इसने हमारे उत्तरदायित्व की भी याद दिला दी कि हमें यह सुनिश्चित करना है कि वित्तीय स्थिरता एवं उपभोक्त संरक्षण से समझौता किए बिना वित्तीय क्षेत्र में नवीनतम परिवर्तन को प्रोत्साहित करना जारी रखना है । रिज़र्व बैंक में हम इस बात से अवगत हैं कि इस संबंध में हम अभी 'सर्वोत्तम प्रयोगकर्ता' नहीं हैं, किंतु वहां पहुंचने के लिए हम हर संभव प्रयास करेंगे।

61. विनियम तथा नवीनतम परिवर्तन साथ-साथ अवश्य चलना चाहिए, विनियम रिज़र्व बैंक का उत्तरदायित्व है। नवीनतम परिवर्तन आइडीआरबीटी तथा यहां उपस्थित सभी बैंकों की प्रेरणा शक्ति होना चाहिए। एक साथ मिलकर, हम अपने वित्तीय क्षेत्र को लोचदार बना सकते हैं और अपनी अर्थव्यवस्था के विकास तथा अपने लोगों के कल्याण में इसे सहायक बना सकते हैं।

62. एक बार पुनः, आज के सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयां तथा बैंकों द्वारा नवीनतम परिवर्तन में सर्वोत्तम की पहचान करने के लिए आइडीआरबीटी को उसके प्रयासों के लिए शुभकामनाएं!